

ली पिनखेइ

(१९४५ -)

ली पिनखेइ का जन्म १९४५ में शेनशी प्रांत की हयाङ काउंटी में हुआ था। १९६४ में उच्च माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह अपने गांव लौटे और कृषि कार्यों में संलग्न रहे। चार वर्षों के बाद वह सेना में भर्ती हुए। १९७० में वे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए। १९७४ में उनका स्थानान्तरण उरुमछी सैन्य क्षेत्र की नाटक मंडली में हुआ और तब से वहां वह लेखक के तौर पर कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने अपना साहित्यिक जीवन १९६४ में आरंभ किया। “हिमाच्छादित पहाड़ में लाल लालटेन” ऑपेरा और सहयोगी प्रयास से लिखित “हचिना की हरी धरती” नाटक के अलावा उनके अनेक लघु उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने अनेक कहानियां भी लिखी हैं। “छुट्टी” और “प्रेम का फव्वारा” उनकी उल्लेखनीय रचनाएं हैं।

थ्येनशान पहाड़ का सैनिक

ली पिनखेड़

१

अपना साहस बटोरकर रास्ते से गुजरने वाली मोटरों को रोकती-चलती मैं सूखी घाटी में पहुंची। मैं सीधी सैन्य टुकड़ी के रिहायशी मकानों की तरफ गई, पर वहां खाली बैरक देखकर मुझे अत्यंत निराशा हुई। सभी सैनिक थ्येनशान पहाड़ की घाटी में काम करने चले गए थे।

पूर्वनिर्मित मकानों की एक कतार थी, उसे ही सैनिकों ने हॉस्टल का नाम दे रखा था। हॉस्टल में मेरे अलावा एक और अतिथि थी। अंडाकार चेहरे और सुंदर आकृति की उस आकर्षक औरत को उम्र तीस के लगभग होगी। उसने अपने काले ऊनी जैकेट पर सफेद फूल लगा रखा था। रोने से सूजी उसकी आंखें देखकर मुझे परेशानी हुई। वह सिसक रही थी, “हाएचओ, मुझे तुम्हें नहीं छोड़ना चाहिए था। मैंने तुम्हारे प्रति अन्याय किया है।”

विशाल गोबी रेगिस्तान में तेज आंधी का शोर था और रेत व धूल हवा के साथ उड़ रही थीं। मैंने मेज और खाली पलंग खींचकर दरवाजे और खिड़की के पास लगाए, ताकि वह गिरे नहीं। फिर चेहरे पर मुंहपट्टी रखकर कपड़े पहने हुई ही लेट गई। मेरी आंखें थोड़ी देर तक छत पर टिकी रहीं।

मैंने अपने कारखाने की प्रबंध समिति से शिनच्याङ में आयोजित भेड़ के बाल काटने की कैची के सुधार से संबंधित सम्मेलन में भाग लेने की अनुमति ली थी, इसके पहले मुझे चिथुङ के कई पत्र मिल चुके थे। हर पत्र में उसने लिखा था, “छ्येन, तुम यहां जरूर आओ। यह एक अच्छा मौका है। तुम अपनी आंखों से देख सकोगी कि थ्येनशान पहाड़ में हम सैनिक कैसे रहते और काम करते हैं। मुझे विश्वास है कि इसके बाद तुम मुझे समझ पाओगी...”। चलने के दिन उसकी मां मुझसे मिलने आई। वह अपने साथ टॉफियां लाई थीं और उन्होंने कहा कि इन्हें तुम स्वयं चिथुङ को देना।

टुकड़ों के मुख्यालय के बाहर चल रही रेतीली आंधी भयंकर थी। न जाने पहाड़ों में क्या स्थिति होगी? थोड़ी देर पहले पांचवीं कंपनी के कमाण्डर हान उस युवती को विदाई देने हॉस्टल में आए थे। मैं अभी सोच ही रही थी कि चिथुङ की टॉफियां उनके हाथों भिजवा दूं, तभी

फोन पर चिथुड से हुई उनकी बातचीत से मैंने अपना इरादा बदल दिया। वह फोन पर कह रहे थे, “डिप्टी बटालियन कमाण्डर, तुम्हारी दोस्त तुमसे मिलने यहां आई हैं। वह पेइचिड से सीधे आई हैं। अपने साथ शादी की थैलीभर टॉफियां लाई हैं।” अफसोस! पिछले तीन महीनों में मैंने उसे एक छोटा पत्र भी नहीं लिखा था।

मैं यहां अपने मामले को अंतिम रूप देने की इच्छा लेकर आई थी। मेरे दोस्त श्याओ थ्येन की बात में सच्चाई थी। उसने कहा था कि चिथुड शायद अगले वर्ष अपने संबंधियों से मिलने पेइचिड आए, अभी वह इकतीस वर्ष का हो चुका है, इसका मतलब एक साल और प्रेम की आग में तड़पना और तब तक दिल की बात दिल में दबाए रखना। इसी वजह से तो मैं यहां आ गई, पर यहां मैं उससे क्या कह सकूंगी? इसलिए अच्छा होगा कि उसे एक पत्र लिख दूं। पत्र लिखने का विचार मुझे अच्छा लगा। मैंने अपनी रजाई फेंकी और बिस्तरे से निकली।

मैंने लिखना आरंभ किया, “कॉमरेड चड चिथुड...” ओह, यह कितना भद्दा संबोधन है! इस संबोधन में एक ठंडापन और हृदयहीनता थी। नहीं, मुझे लिखना चाहिए, “प्रिय चिथुड”। हर बार जैसे ही मैंने उसका नाम लिखकर पत्र लिखना आरंभ किया कि मेरी आंखों के सामने उसकी छवि उभरी, तेज नजरों वाला एक हष्ट-पुष्ट युवक। उसके कर्णभेदी कहकहों की आवाज मेरे कानों में गूंजने लगी। ऐसे मौके पर मुझे लगा कि वह मेरी बगल में खड़ा है और मेरे बालों को सहलाते हुए कह रहा है, “छ्येन, तुम कितनी कठोर हो! मैंने तय कर लिया है, मैं तुम्हारे साथ पेइचिड लौट जाऊंगा। मैं तुम्हें छोड़कर अब कभी नहीं जाऊंगा।”

“असंभव,” मैंने स्वयं से कहा। फिर कुछ सोचकर मैंने इरादा बदला, “पहाड़ में उससे मिलने आने के बाद इतना निराश होने की क्या जरूरत है?” मैंने स्वयं को समझाया। इसके पहले भी मेरे मन में यह अंतर्द्वंद्व कई बार उठ चुका था, फिर से उसी तरह के विचार मन में उठे। अचानक मैंने कलम फेंकी और कागज फाड़ फेंका। फिर से बिस्तरे में आकर लेट गई और रोने लगी।

कमरे में लैम्प की हल्की पीली रोशनी युवती पर पड़ रही थी, वह किसी कांस्य मूर्ति की तरह लग रही थी और बाहर तेज हवा अपने झकोरों से छोटी झोंपड़ी को हिला रही थी।

अगले दिन सुबह कार्यस्थल से कोई बड़े नेता जीप से आए और युवती को अपने साथ ले गए। युवती के जाने के बाद दुखी होकर मैं कमरे में टहलने लगी, तभी कॉमरेड हान कमरे में आए। उनके मौसम के सताए चेहरे पर रहस्यपूर्ण मुस्कान थी। उन्होंने मुझे माचिस की तोड़ी डिबिया दी, उस पर लिखा था :

छ्येन, माफ करना, तुम्हें थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। यहां कुछ जरूरी काम आ पड़ा है, जिसके लिए मुझे रुकना पड़ेगा। कल मिलूंगा।

चिथुड

लिखावट साफ नहीं थी। लिखावट से स्पष्ट था कि पत्र जल्दी में लिखा गया है। मैं परेशान हो उठी। “क्या बात हो सकती है?” मैंने सोचा। “पिछले दो दिनों से यातायात संपर्क

टूट गया था..." हान ने कहा। उनकी बात और युवती के जैकेट पर लगे सफेद फूल ने मेरी चिंता बढ़ा दी। मैं एक मिनट भी इंतजार न कर सकी। मेरी इच्छा हुई कि मैं अभी तुरंत उससे मिलूं। "हां, अभी चलें!" मैंने कहा और तेज कदमों से आगे बढ़ी।

बिना किसी झिझक के मैं एक लॉरी के केबिन में बैठी, उस लॉरी पर खाद्य सामग्री लदी थी।

२

लॉरी पहाड़ी सड़कों पर दौड़ी जा रही थी।

मेरी उम्मीद से अधिक चौड़ी सर्पीली एस्फाल्ट सड़क पहाड़ी ढलान पर बनी थी। चारों तरफ देवदार के बड़े पेड़ थे, जो सूरज को छिपा रहे थे। घाटी में नीचे एक नदी थी, जिसमें बर्फ के टुकड़े भी पानी के साथ बह रहे थे। अभी सड़क यात्रायात के लिए नहीं खुली थी, इसलिए इक्के-दुक्के ट्रक आते-जाते दिखाई पड़ रहे थे। घुंघली घाटी में शांति और ठंड थी। तो यह सड़क चिथुड़ ने बनाई है! इस सड़क को मैंने उसके पत्रों के माध्यम से अपने कल्पना जगत में आकार लेते देखा था! मेरे अंदर एक नयी भावना का संचार हुआ और मैं कविता या स्वप्न की दुनिया में प्रवेश कर गई। सचमुच, हमारा प्रेम एक स्वप्न की तरह था...

१९७१ में हमारे स्कूल में भयंकर खलबली मची थी। स्कूल के छात्रों को देहातों में जाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से बुलाई गई सभा में किसी ने अपना संदेह व्यक्त किया, "हम छात्रों को अवश्य ही निर्धन और निम्न मध्यमवर्गीय किसानों से पुनर्शिक्षित होने के लिए देहातों में जाना चाहिए, पर मेरा सवाल है..." उसने अपनी आशंका व्यक्त की, "पर चीन में बेरोजगारी की समस्या के बारे में आप क्या सोचते हैं?" सारा स्कूल स्तंभित रह गया और कैम्पस में चिथुड़ की चर्चा होने लगी। उसकी आलोचना करने के लिए एक सभा बुलाई गई। सभी लोग देखना चाहते थे कि यह प्रतिक्रियावादी तत्व कितने दुस्साहस के साथ अपनी राय पेश करता है? संयोग ऐसा हुआ कि उसकी भर्त्सना करने के लिए सबसे पहले मुझे बुलाया गया। मेरे औपचारिक भाषण को सुनकर श्रोताओं ने टिटकारियां मारीं। क्रोध में मैंने श्रोताओं पर नजर डाली तो सामने मध्य में चिथुड़ बैठा दिखाई पड़ा। उसके बाल छील दिए गए थे, वह तिरस्कार में अपना सिर हिला रहा था। उसके हावभाव से ऐसा लगा जैसे इस सभा से उसे कुछ लेना-देना न हो। इससे सभा में वह गंभीरता नहीं रह गई। मैं उसे लाल रक्षक हेडक्वार्टर में ले गई। मैंने मेज पर मुक्का मारते हुए उससे पूछा, "तुम अलग और जिद्दी दिखने की कोशिश कर रहे हो। तुम अपने आपको आखिर समझते क्या हो?" उसने मेरा उपहास किया और मुझसे पूछा, "तुम अपने बारे में क्या सोचती हो, लड़कों की तरह बाल कटा रखे हैं, क्या तुम अलग और जिद्दी दिखने की कोशिश नहीं कर रही हो?" गुस्से के कारण मेरे होंठ नीले पड़ गए और चेहरा लाल हो गया। पर मैं उसे कोई जवाब न दे सकी। कुछ दिनों के बाद चड चिथुड़ ने बड़े रेखाक्षरों का पोस्टर लगाया, उसमें उसने घोषणा की कि वह चीनी क्रांति की पवित्र भूमि उत्तरी शैनशी प्रांत के देहातों में रहेगा और काम करेगा।

हम दोनों को एक ही गांव में भेजा गया। मुझे अपनी जीत महसूस हुई। आखिरकार उसने पश्चाताप किया और गांव में किसानों से पुनर्शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार हुआ। “चड़ चिथुड़, तुम्हें अपनी नौकरी के लिए यहीं रुकना चाहिए था,” शेनशी जाते समय मैंने उससे व्यंग्य किया, “तुमने क्यों इस पठारी इलाके में जाने का फैसला लिया?” “क्या तुम्हें मालूम है कि अमरीकियों ने अपने पश्चिमी क्षेत्रों को कैसे विकसित किया था?” वह हंसे हुए बोला, “अपने पूर्वजों को ही देखो, वे सीमाओं पर जाकर रहे और सीमा की चौकसी की!” मैंने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और मुंह बंदकर हंसी। वह ठहाका लगा कर हंसने लगा। मैंने अपनी जिंदगी में इतना विचित्र और जोरदार ठहाका नहीं सुना था। मैं चिढ़ गई, पर अन्य सहपाठियों ने ताली और सीटी बजाई और उसकी प्रशंसा की। मैंने मन ही मन में कहा, “ऐसा अहंकार न करो। हालांकि मैं मिडिल स्कूल की छात्रा हो सकती हूं, पर मैं कॉलेज के छात्रों और उनके प्राध्यापकों को नीची नजर से देखती हूं। तुम्हें किस बात का घमंड है। तुम सब बैल की तरह मूर्ख हो।”

दो वर्ष बीत गए। राजनीतिक आंदोलनों का कोई अच्छा नतीजा न निकला। स्कूल के छात्र फिर से पेइचिङ लौटने के लिए शराब की बोतल लिए प्रभावशाली व्यक्तियों के दरवाजे खटखटाने लगे। जिन छात्रों के अच्छे संपर्क थे, वे मेरा उपहास कर चले गए; जिनके संपर्क नहीं थे, उन्होंने अपनी झुंझलाहट मुझ पर निकाली, क्योंकि मैं “सांस्कृतिक क्रांति” के सक्रिय तत्व की हैसियत से गांव में आई थी। अब मेरा उत्साह भी धीरे-धीरे कम होता गया और अंततः मेरा भी मोहभंग हो गया। चूंकि मैंने पेइचिङ लौटने से इंकार कर दिया था, इसलिए मुझे वहीं रहना था। सोचने पर दुख होता था कि मैंने चड़ चिथुड़ के साथ क्यों ऐसा व्यवहार किया! मैंने चड़ चिथुड़ पर गौर करना आरंभ किया। मैं यह देखने लगी कि वह आसपास के माहौल के प्रति क्या रवैया रखता है। वह अब पहले जैसा नहीं रह गया था। न तो उत्तेजक भाषण देता था और न बड़ी टिप्पणियां करता था। वह अल्पभाषी बन गया, दिन-रात खेतों में काम करता और खाने के समय भी किसी से बातचीत न करता। वह खाली समय में दर्शनशास्त्र से संबंधित पुस्तकें और पत्रिकाएं पढ़ा करता था। उसके बिस्तर पर पुस्तकें और पत्रिकाएं बिखरी रहती थीं। उसकी भौंहें हमेशा चढ़ी रहती थीं और ऐसा लगता था कि वह विश्व की किसी जटिल गुथी को सुलझाने में लगा है।

गर्मियों में एक दिन दोपहर में अचानक वर्षा हुई, आलतियों से पानी टपक रहा था। बिजली चटक कर अहाते के एल्म पेड़ पर गिरी। चड़ चिथुड़ बनियान और हाफपैट पहने नंगे पांवों बारिश में भीगता गांव से बाहर जा रहा था। निरी मूर्खता थी, वह क्यों खतरा मोल ले रहा था! मैं भी उसे आवाज देती हुई उसके पीछे दौड़ी। वह एक चट्टान पर खड़ा आकाश की तरफ देखता हुआ अपने हाथ हिला रहा था। पास आने पर मैंने सुना, वह सुंग राजवंश काल की एक कविता का पाठ कर रहा था, “महान नदी पूर्व की ओर बहती है, महान पुरुषों और पिछली पीढ़ियों के निशान मिटाती हुई...।” “पागल हो गए हो क्या?” न जाने कहां से मुझे शक्ति मिली, मैंने उसका हाथ पकड़कर पूछा। उसने चौंकर मुझसे कहा, “तुम पागल हो गई हो।” “तुम अवश्य ही पागल हो गए हो, तभी ऐसी भयंकर वर्षा में बाहर निकले हो।

क्या तुम आत्महत्या का प्रयास नहीं कर रहे हो?" "आत्महत्या? मैं तो वर्षा में नहा रहा था।" उसने शांत स्वर में एक-एक शब्द पर जोर देते हुए बताया। मैंने उसे घूरकर देखा। मेरी चिंता समझकर उसने ठहाका लगाया। "तुम अपने आप को बुद्धू बना रही हो, खेतिहर," उसने कहा। (गांव में आने के बाद मैंने अपना नाम खेतिहर रख लिया था)। "बिजली, तूफान और बवंडर से महिमामंडित देहात का यह विस्तार स्वयं में एक कविता है! इसने पीढ़ियों से वीर पैदा किए हैं। नए चीन को जन्म देने वाले क्रांति के इस पवित्र स्थान में हम क्यों डरें और प्रकृति की परीक्षाओं से क्यों भागें? आओ, मेरे साथ तुम भी घूमने चलो!" उसके रोमांटिक और ओजपूर्ण शब्दों ने आग की तरह मेरी ठंड समाप्त कर दी और पहली बार मैंने उसकी प्रखर बौद्धिकता और हृदय की शुद्धता की झलक देखी।

हम दोनों गपशप करते हुए लगभग दो घंटे तक घूमते रहे। बाद में कुछ दिनों तक मैं बुखार में तपती रही। वह एक दिन आया, उसे भी जुकाम हो गया था। उसने मेरे सामने अप्रत्याशित घोषणा की, "मेरा जीवन बड़ा बेढंगा और अनुशासनहीन रहा। मुझे एक सैनिक का जीवन जीना चाहिए। मैं सेना में भर्ती हो जाऊंगा!" मैं नहीं चाहती थी कि वह मुझे छोड़कर जाए, मुझे नहीं मालूम कि मैं ऐसा क्यों चाहती थी। इसलिए मैंने ताना मारते हुए कहा कि वह किसी भी तरह पेइचिङ लौटने की कोशिश कर रहा है। "हां, कुछ लोग व्यक्तिगत हित के लिए सेना में भर्ती होते हैं, पर मैं समाज को और अच्छी तरह जानने के लिए सेना में भर्ती होऊंगा..." मैंने निराश होकर उसे याद दिलाया, "स्कूल में तुम्हारी आलोचना हुई थी और तुम्हें अनुशासित किया गया था, है कि नहीं?" उसने तुरंत अपनी उंगली दांत से काटी और कागज पर खून से लिखा, "मनुष्य को दुनिया का मुकाबला करना चाहिए।" उसने उस क्षेत्र में सेना के नियुक्ति अधिकारी को वह कागज देने का फैसला किया। "ठीक है!" मेरी आंखों में आंसू भरे थे। "तुम सब मुझे छोड़कर चले जाओ। मैं आत्महत्या कर लूंगी।" उसने कठोर शब्दों में मुझसे कहा, "आत्महत्या! क्या एक योग्य आदमी ऐसा करता है? जरा देहात के लोगों को देखो। उन्होंने खुले दिल से क्रांति में मदद की और आज वे भूखे हैं। उन्हें पेट भरने के लिए पर्याप्त काला सोयाबीन या बाजरा भी नसीब नहीं होता। वे क्या करें? आत्महत्या कर लें? शहरों या कस्बों में स्थानान्तरण करें और वहां काम करें व रहें? प्रिय खेतिहर, पिछले कुछ वर्षों में मैंने अपनी आंखों से छोटे लोगों की दुर्दशा देखी है। शायद मैं तुमसे अधिक दुखी हूं। संभव है 'सांस्कृतिक क्रांति' हमें बर्बाद कर दे, पर इसी में कुछ ठोस और पके हुए व्यक्ति निकलेंगे। हमें गंभीरता से सोचना और स्थितियों का विश्लेषण कर देश और लोगों के हित में काम करना चाहिए।" मैं उसे अच्छी तरह जानती थी, यदि उसे लगा कि उसने सही फैसला किया है तो वह पूरी निष्ठा से उस दिशा में आगे बढ़ता रहेगा। इसलिए भरी आंखों से उसे विदा करने के लिए मैं उसके साथ तीन किलोमीटर तक गई। वह छिड़हाए के छाएदाम बेसिन में चला गया। वहां भीषण ठंड पड़ती थी और लोगों को सालभर गर्म कपड़े पहनने पड़ते थे। उसने मुझे कुछ पत्र लिखे, पर सभी पत्र अवैयक्तिक थे, उनमें आत्मीयता नहीं थी। मैंने भी अपना दिल पत्थर कर लिया। फिर भी अपने पहले प्रेम और प्रेमी को कोई कैसे भूल सकता है?

३

देवदार के जंगलों को पीछे छोड़ती लॉरी चली जा रही थी। एक जमी नदी पार करने के बाद झिलमिलाती ढलान और हिमाच्छादित पर्वतश्रेणियां दिखाई पड़ीं। अचानक आकाश विस्तृत लगने लगा। नीले आकाश की पृष्ठभूमि में सफेद बर्फ चमक रही थी।

१९७७ में मेरा स्थानान्तरण पेइचिंग हो गया था। जाड़े की एक शाम मैं श्याओ थ्येन के घर एक पार्टी में गई थी और आधी रात तक नाचती रही थी। वहां से लौटने पर लगभग बंद घर का दरवाजा खोलकर मैं अंदर घुसी तो देखा कि मां बिस्तर पर पड़ी कराह रही है और पिताजी, छोटा भाई, छोटी बहन और एक सैनिक सभी बिस्तर के पास खड़े हैं। मुझे देखकर सैनिक ने कहा, “खेतिहर ली...” उसकी भारी आवाज ने मुझे चौंका दिया। चड चिथुड, वह चिथुड ही था। उसे मेरा पुराना नाम अभी तक याद था। “तुम्हारी मां एक भीड़ भरी बस में चढ़ने की कोशिश में गिर पड़ीं और कमर में चोट खा गई, चड उन्हें अपनी पीठ पर ढोकर यहां ले आया,” पिता ने बताया। मां बैठने की कोशिश करती हुई बोली, “वह तो जा रहा था, पर जब उसे मालूम हुआ कि तुम मेरी बेटी हो तो रुक गया।”

मुझे लगा कि मैं सपने की दुनिया में पहुंच गई हूं। वह वर्दी में लंबा और तगड़ा लग रहा था। उसके चौकोर चेहरे से पौरुष टपक रहा था। वह किसी शिकारी की तरह मजबूत लग रहा था। वह मुझे ऊपर से नीचे तक निहार रहा था। फिर हमारी आंखें मिलीं।

इस उलझन के क्षण में भी मां का एकालाप जारी था, “छ्येन अभी तक अकेली है। शादी का नाम सुनते ही काटने को दौड़ती है। तुम्हारा क्या हाल है? क्या तुमने शादी कर ली?” वह शर्माया हुआ अपने हाथ मल रहा था और मेरे दिल की धड़कन तेज होती जा रही थी। थोड़ी देर के बाद उसने हकलाते हुए कहा, “सेना में ऐसा नियम है कि अविवाहित सैनिक को हर दो साल के बाद छुट्टी दी जाती है। मेरे कमांडर ने इस बार कहा है कि मैं बगैर शादी किए न लौटूं।” मैंने किसी तरह अपनी हंसी रोकी और राहत की सांस ली। मेरी छोटी बहन इतने जोर से हंसी कि चिथुड का चेहरा शर्म से लाल हो गया।

रात गहरी हो गई थी। जब मैं उसे सड़क तक छोड़ने आई तो रास्ते में कहीं कोई नहीं मिला। पूरी गली सुनसान पड़ी थी।

“रविवार को आना।”

“नहीं, नहीं आ पाऊंगा। मेरी छुट्टी खत्म हो गई है।”

“अच्छा तो तुम्हें पत्नी मिल गई है?” यह कहने के साथ ही मुझे अफसोस हुआ कि मैंने ऐसी छिछोरी टिप्पणी क्यों की। कड़वी मुस्कान के साथ उसने कहा, “पेइचिङ की लड़कियों का दिल जीत पाना मुश्किल है। कौन मुझ जैसे शिनच्याङ में नीरस काम करने वाले से शादी करेगी?”

“रहने भी दो,” मैंने अपनी प्रसन्नता छिपाकर कहा, “मुझे लगता है कि अफसर बन जाने से तुम बहुत ज्यादा नकचढ़े हो गए हो।”

“अरे नहीं!” उसने सफाई दी, “मैं नहीं चाहता कि कोई मुझे किसी लड़की से मिलाए।

मैं ऐसी लड़की चाहता हूँ, जो मेरे साथ काम कर चुकी हो और मुझे अच्छी तरह जानती हो..." उसने उत्सुकता से मेरी तरफ देखा। घबराकर अपने बालों को सहलाती हुई मैं दूसरी तरफ देखने लगी।

हम दोनों खामोश, एक-दूसरे के बोलने की प्रतीक्षा में खड़े रहे। हमारे दिल की धड़कन तेज हो गई थी। पर चिथुड आत्मसंयमी निकला, उसने घड़ी देखी और फिर हाथ मिलाकर चला गया।

जिस दिन चिथुड वापस लौटा, मैं उसे विदा करने स्टेशन भी गई। लौटते समय उसकी मां बुदबुदाती रहीं, "अब वह डिप्टी बटालियन कमांडर हो गया है और सेना का आदर्श इंजीनियर भी है। पर इन बातों से क्या फर्क पड़ता है? २९ वर्ष की उम्र हो गई, पर अभी भी अकेला है। लड़कियों की निगाहों में सैनिक आजकल निकम्मे हैं। देहात की लड़कियां भी सैनिकों को पसंद नहीं करतीं, वे भी शहरी लड़कों को खोजती हैं। भला कौन उसके साथ शिनच्याड जाएगी?..."

प्रायः रात के चमकीले तारे चिथुड के साथ देहात में बिताए पुराने दिनों की याद दिलाते थे। मैं अधिक दिनों तक प्रतीक्षा नहीं कर सकी। मैंने उसका हाल जानने के लिए उसको पत्र लिखा। एक महीना बीता, दूसरा महीना भी बीत गया, पर शिनच्याड से कोई जवाब नहीं आया। कोई उसकी चर्चा करता तो मुझे अच्छा नहीं लगता था।

लगभग दो महीनों के बाद १९७८ का वसंत आया। एक दिन शाम को काम से लौटने पर मेरी छोटी बहन ने मुझे चिढ़ाते हुए सुनाया, "बड़ी अच्छी खबर है। मैं सब-वे में आज चड चिथुड से मिली थी। वह आजकल सेना अकादमी में पढ़ रहा है। वह तुम्हारे बारे में पूछ रहा था।" "उसने पूछा था? मेरी बला से!" मेरे जवाब से छोटी बहन का मुंह अपना सा रह गया, वह चली गई। उसी दिन शाम को चिथुड आया, चेहरे पर वही पुरानी मुस्कान थी। बिना किसी आत्मीयता के मैं उसे अपने कमरे में ले गई। मैं जानबूझकर उससे आंखें नहीं मिला रही थी।

उसने क्षमा याचना के स्वर में कहा, "जानता हूँ, मुझसे नाराज हो!" पर जब मैंने उससे पूछा कि उसने मेरे पत्र का जवाब क्यों नहीं दिया तो उसकी मुस्कराहट गायब हो गई और त्योरियां चढ़ गईं। कुछ देर के बाद उसने निर्णयात्मक स्वर में कहा, "हम सैनिक स्पष्टवादी होते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम बुरा नहीं मानोगी, हालांकि मैं जानता हूँ कि यह कहकर मैं भयंकर गलती कर रहा हूँ। 'सांस्कृतिक क्रांति' के पहले सीमांत क्षेत्र या उत्तरपश्चिमी पठार के सैनिकों की बड़ी इज्जत की जाती थी। वे जहां भी जाते थे, सीना फुलाकर गर्व के साथ अपना परिचय देते थे। लड़कियों से मिलने पर भी यही कहते थे, 'मैं सीमांत क्षेत्र से आया हूँ।' इतना कहने भर से सामने खड़े व्यक्ति की आंखों में प्रशंसा झलकने लगती थी। पर अब हम बड़े निरीह भाव से अपना परिचय देते हैं, मैं तो सीमांत क्षेत्र से आया हूँ; संभव है आपको यह बात अच्छी नहीं लगे।" उसने लंबी सांस ली, उसका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था, "मैं तुमसे सच कहूँ, मुझे किसी की सहानुभूति नहीं चाहिए, और न ही मैं किसी की दया चाहता हूँ। जब मैं पिछली बार पेइचिड में था, सैनिकों के प्रति लोगों का रवैया देखकर

पागल हो गया। मैं ऐसा अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता!" उसने मेज पर मुक्का मारा, उसका पूरा बदन थरथर कांप रहा था। "तुम नहीं बर्दाश्त कर सकते, इसलिए तुमने मान लिया कि मैं कर सकती हूँ?" मैंने प्रतिकार किया। "खेतिहर, मैं जानता हूँ कि तुम्हारा पेइचिङ स्थानान्तरण आसान नहीं है। मैं क्यों भविष्य की तुम्हारी खुशी में बाधक बनूँ? इसलिए..." "इसलिए क्या? जब तुम्हें सब मालूम ही है तो बताने की क्या जरूरत है?" मैं इतना ही कह सकी।

मेरे व्यंग्यपूर्ण वाक्यों से वह चुप हो गया। अनेक बार वह जाने के लिए उठा, पर हर बार कुछ सोचकर बैठ गया। अपना गुस्सा उतरने पर उसे तकलीफ पहुंचाने का मुझे अफसोस हुआ। वह निश्चय ही मुझसे प्यार करता था, पर मुझे किसी दुविधा में नहीं रखना चाहता था। शायद मेरा पत्र पढ़कर उसे बहुत तकलीफ हुई थी और उसे स्वयं पर नियंत्रण करने में समय लगा था। पर अंत में वह केवल एक असंतोषजनक उत्तर लेकर आया था, जो उसकी स्वीकारोक्ति थी। उसके जैसे आत्मसम्मान प्रिय व्यक्ति को किसी लड़की का व्यंग्य सहन करने में भयंकर कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ा होगा। मैंने बेचैनी महसूस की।

वंसत आखिर प्यार का मौसम होता है। इसलिए आंखें बंदकर मैंने स्वयं को भावनाओं के सागर में लहराने दिया। मुझे उसके पास जाना चाहिए। मैंने दुर्भाग्य से बचने के लिए प्रार्थना की।

४

लार्री तेजी से चली जा रही थी... चली जा रही थी...

बादलों के बीच से लाल सूरज झांक रहा था। उसकी सुनहरी किरणें सफेद बर्फ से परावर्तित होकर झिलमिला रही थीं। नवागंतुक बर्फ की सुहावनी छटा की तुलना किसी सुंदर लड़की से करता है। उस समय वह यह कल्पना नहीं कर पाता कि हिमस्खलन रूपी सुंदर लड़की की कुरूपता कितनी विनाशकारी होती है।

मेरी मां को हमारे संबंधों की प्रगाढ़ता से खुशी हुई, पर चिथुड का अंदेशा सही निकला। वह चिंतित थी कि शिनच्याङ बहुत दूर है। मेरी छोटी बहन की दूसरी राय थी। उसे विश्वास था कि चिथुड को फौजी अकादमी में काम मिल जाएगा और यदि यह नहीं भी हो पाता है तो वह सेना की नौकरी छोड़कर पेइचिङ वापस आ जाए। मेरी प्रिय सहेली मीमी ने उसे छोड़ देने की राय दी। उसने कहा, "स्थितियां बदल गई हैं। अब सेना की नीरस नौकरी अच्छी नौकरी नहीं रह गई है। यदि मैं तुम्हारी तरह सुंदर होती तो अवश्य ही किसी बड़े अधिकारी या प्रवासी चीनी या कम से कम किसी उच्च शिक्षा प्राप्त लड़के को पसंद करती। उसे छोड़ दो!" श्याओ थ्येन ने तो चुटकी लेते हुए कहा, "अपने हीरो से हमें क्यों नहीं मिलवाती हो?" श्याओ थ्येन के साथ मेरे मित्रतापूर्ण संपर्क के बारे में चिथुड को आपत्ति नहीं थी, मैंने उसे अपने दोस्तों से मिलवाने का निश्चय किया। जब हम उनसे मिलने पहुंचे तो मीमी और कुछ अन्य नाच रहे थे। मीमी ने चुटकी ली, "अरे, संगीत और नृत्य की भूमि शिनच्याङ का मेहमान आया है, यह तो खुशी की बात है। आओ, हमें अपना नृत्य दिखाओ!" दूसरों ने

उहाके लगाए। मैंने अपमानित महसूस किया। किसी ने उम्मीद नहीं की थी कि चिथुड उसका आग्रह स्वीकार करेगा। वह आराम से मेरे साथ वाल्ज की धुन पर नाचने लगा। उसके कदम बड़े सधे हुए थे और वह पानी के ऊपर लहरा रहे ड्रैगनफ्लाई की तरह वाल्ज की धुन पर लहरा रहा था। मैं उसका नृत्य देखकर दंग रह गई। उसने मीठी मुस्कान मेरी तरफ फेंकी और धीमे स्वर में बोला, “क्यों, अगली बार हम लोग संगीत सुनने चलेंगे?” उस दिन सचमुच मेरी खुशी का प्याला छलका था।

श्याओ थ्येन को ईर्ष्या हुई। अपनी उंगलियां चटखाते हुए वह बोला, “नहीं, यह अच्छा नहीं है। कुछ सुरीली धुन होनी चाहिए।” “हां, ‘अच्छी शराब व काफी’ की धुन बजाओ,” किसी ने कहा। टेप पर नई धुन बजने लगी और सभी फटी आवाज में गाने लगे “कौन करता है मुझे प्यार? कौन करेगा मुझे प्यार?...” मीमी अपने भारी कूल्हे मटका रही थी और उसका मुलम्मा किया हुआ नेकलेस उछल रहा था। उसने चिथुड को नृत्य के लिए आमंत्रित किया।

चिथुड ने अप्रसन्नता से भौंहे सिकोड़ीं, “माफ कीजिए, अब मुझे जाना है।” वह कमरे का नक्काशीदार दरवाजा खोलकर झटके से बाहर निकला।

मैं उसके पीछे दौड़ी। मैं जैसे ही उसके पास पहुंची, मेरे कुछ बोलने के पहले वह बिफर कर बोला, “कुछ बताने की जरूरत नहीं है! मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहता! यह कोई मनोरंजन नहीं है। ये सब निक्कमे और कुंठित लोग हैं! हमारे थ्येनशान के सैनिक यह सब देखकर क्या सोचेंगे?” फिर थ्येनशान! थ्येनशान-थ्येनशान सुनकर मेरे कान पक गए थे। “तुम मुझे प्यार करते हो या अपने थ्येनशान को? तुम्हारे दोस्त क्या सोचते हैं, उससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है!” मैं अपनी साइकिल पर चढ़ी और निकल गई। वह वहीं खड़ा गुस्से में उबल रहा था। उसे अच्छी सजा मिली थी।

इसके बाद अगले दो सप्ताह तक हम नहीं मिले। मैं प्रायः रात में नहीं खाती थी। मैंने अंग्रेजी की एक पाठ्यपुस्तक पढ़ने की कोशिश की, पर उसमें भी दिल नहीं लगता था। बड़ा खुशक मौसम था। गर्मी पड़ रही थी और हवा बिलकुल नहीं चलती थी। फिर अचानक वह दो गुलाबी टिकट लेकर हाजिर हुआ था।

“आज एक संगीत समारोह है। आओ चलें!” वह बड़े उत्साह में था, उसके व्यवहार से ऐसा लग रहा था कि हमारे बीच कभी अनबन ही नहीं हुई है। “तुम जाओ! मैं सोने जा रही हूँ।” मैं बिस्तर पर लेटी ही थी, मैंने रजाई खींचकर ओढ़ ली और मुंह ढक लिया। वह थोड़ी देर तक खामोश रहा। उसकी कुर्सी की चरमराहट दिल को चीर रही थी। आखिरकार उसने कहा, “ठीक है! अपने अशिष्ट व्यवहार के लिए मैं दुखी हूँ, पर मुझे लगता है कि तुम भी पिछले कुछ वर्षों में काफी बदल गई हो। तुमने अपना आत्मिक आधार खो दिया है,” उसने नरम स्वर में कहा और उसका हर शब्द दिल के तारों को झंकृत करता रहा।

उसका कहना सही था। देहात के दिनों की याद दिलाने की जरूरत नहीं थी। पेइचिड लौटने के बाद काफी दिनों तक मैं स्वयं को अत्यधिक उदास महसूस करती रही थी। काम, भोजन और वेतन मेरे जीवन की लीक बन गई थी। श्याओ थ्येन के घर की पार्टी से लौटने पर मैं खाली महसूस करती। इससे बचने के लिए कभी-कभी कमरे में बंद होकर मैं अंग्रेजी

पढ़ती या लिपिकला का अभ्यास करती। रात में बिस्तर में लेटी ऐसा महसूस करती कि मेरी नाव अपार समुद्र में दिशाहीन बही जा रही है। कभी-कभी जीवन में सही उद्देश्य ढूँढ़ने का प्रयास करती। पर कोई क्या कर सकता था? चौगुटे का पतन हो गया था, पर इससे मुझे क्या फायदा हुआ था? मैंने छै वर्षों तक देहात में विपरीत परिस्थिति में श्रम किया था, पर कुछ लोग अभी भी ऐसा सोचते थे कि मैं चौगुटे का शिकार बनी थी। अब श्याओ थ्येन ही को लें! अपने प्रभावशाली संपर्कों से सेना की सूची में अपना नाम दर्ज कराके वह देहात जाने से बच गया था। वह शहर में बना रहा और यहां तक कि उसे पार्टी की सदस्यता भी मिल गई। फिर रहस्यपूर्ण तरीके से उसे पर्यटन ब्यूरो की नौकरी मिल गई थी। उसकी मदद के बिना मेरा स्थानान्तरण पेइचिङ नहीं हो सकता था—मैं उससे हमेशा मुस्कराकर मिलती थी। देहात जाने के समय की मेरी पहलकदमी को याद कर अभी भी मेरे दोस्त हंसा करते थे। उन महान आदर्शों और क्रांति का उपहास किया करते थे।

“देखो, यथार्थ कभी भी कल्पना की तरह सुंदर नहीं हो सकता।” चिथुङ ने उसांस भरी। फिर उसने पिछले वर्षों के अपने अनुभव सुनाए।

“१९७३ में जब मैं सेना में भर्ती हुआ, उस समय मैं उसे स्वर्ग समझा करता था। कंपनी में शामिल होने के कुछ ही दिनों के बाद मुझे रेजीमेंट के अवकाशकालीन प्रचार दल में स्थानान्तरित कर दिया गया। प्रतिदिन जब सैनिक भोजनालय में खाने बैठते तो रेजीमेंट कमांडर की पालतू मुर्गियां खाने की तलाश में वहां पहुंच जाती थीं और थोड़ी ही देर में भोजनालय उनकी विष्टा से भर जाता था। तुम तो जानती हो, मैं कितनी जल्दी उत्तेजित हो जाता हूं। इसलिए एक दिन गुस्से में मैंने बड़े झाड़ू से एक मुर्गी को मार डाला। इसके बाद कमांडर की आलोचना एक पोस्टर पर लिखकर भोजनालय के दरवाजे पर टांग दी। नतीजे के तौर पर मुझे अपनी आत्मालोचना लिखनी पड़ी और अनुशासित करने के लिए मुझे कंपनी में वापस भेज दिया गया। मेरे क्रोध का ठिकाना न रहा। कमांडर की ऐसी की तैसी! अगर कोई प्रशासनिक अधिकारी होता तो उसे बड़ी आसानी से पूंजीवाद-समर्थक ठहरा दिया जाता; उस समय सोचने पर मैंने महसूस किया और मेरा पक्का यकीन हो गया कि यदि फौजी यूनिट में ऐसी स्थिति है तो हमारे देश की स्थिति सचमुच बड़ी दयनीय है। बाद में हमारी रेजीमेंट को शिनच्याङ भेजा गया। सैन्य ट्रकड़ी अभी पहाड़ों में घुसी ही थी कि उसे बर्फीले तूफान का सामना करना पड़ा। हमारा ट्रक घोंघे की चाल से चल रहा था। चौबीस घंटे में हमने पांच किलोमीटर रास्ता तय किया। कुछ ही दिनों में हमारा खाना समाप्त हो गया। अर्दली ने ट्रक के नीचे घुसकर धमनदीप से कमांडर के लिए सोयाबीन पकाया। पर उन्होंने सारा सोयाबीन ड्राइवरों को दे दिया। बर्फ हटाने और ट्रक को धक्का देने में उन्होंने हमारा साथ दिया। मैं उस समय उनसे इतना प्रभावित था कि मैं नारा लगाना चाहता था, “कमांडर जिंदाबाद!” मेरे दिमाग में उनके प्रति कोई संदेह नहीं रह गया था, वह सचमुच अनुभवी क्रांतिकारी थे। बाद में मैं बार-बार सोचता रहा कि वह आखिर किस मिट्टी के बने हैं, पर मैंने जितना ही सोचा, उतना ही उलझता गया। समय बीतने के साथ मुझे जवाब मिल गया, “सांस्कृतिक क्रांति” के दुष्प्रभाव से हमारे सोचने का तरीका यांत्रिक हो गया था। हमें अति पर चलने की आदत हो गई थी। यदि किसी

की प्रशंसा कर रहे हों तो उससे अच्छा कोई नहीं, यदि उसी की आलोचना कर रहे हों तो उससे बुरा कोई नहीं। जो लड़कियां लड़कों की तरह बाल कटवाकर 'वफादार नृत्य' करती थीं, उन्हें अधिक क्रांतिकारी माना जाता था। आजकल लंबे बाल और रॉक-एण्ड-रोल की धुन पर नाचना पूर्ण बौद्धिक मुक्ति माना जा रहा है। सभी चीजें बदल रही हैं और तुम बहुत जल्दी समझ जाओगी कि हवा के रुख के साथ चलना ही सबसे सुरक्षित रास्ता है। मैं अभी भी नहीं समझ पाता हूँ कि देहातों में जाकर काम करने में क्या बुराई है और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए क्रांतिकारी प्रेरणा से काम करना क्यों गलत है। क्या अब हमारे पास बिखरे सपने और कटु अतीत मात्र शेष रह गए हैं? यदि हमारी पीढ़ी का यही निष्कर्ष है तो उनसे देश के प्रति क्या उम्मीद की जा सकती है? ऐसे विचारधारात्मक ध्वंसावशेष के आधार पर देश कैसे नए आत्मिक जीवन का निर्माण करेगा?"

चिथुड की ईमानदारी से कही सारी बातें मेरे दिल को छूती रहीं, बाहर हो रही बारिश की टिप-टिप ने मुझे उन दिनों की याद दिला दी, जब मैं क्रांतिकारी छात्र हुआ करती थी और चिथुड के साथ उत्तरपश्चिमी पठारों में रहती और काम करती थी। ओह, वह अविस्मरणीय रात्रि, भयंकर बारिश में उसका नहाना!! और इस कमरे में आज फिर हम दोनों एक साथ थे : एक ही पीढ़ी के, पर एक-दूसरे से भिन्न और दूर? सामाजिक अन्याय से पीड़ित मैं इतनी कुंठित और कटु क्यों हो गई, जबकि वह जीवन के सत्य की खोज में लगा रहा और उसे पाया। मैं स्वयं पर नियंत्रण न रख सकी और रोने लगी।

चिथुड ने मेरे चेहरे पर से रजाई हटाई और अपने रूमाल से गाल पर लुढ़क आए आंसुओं को पोंछा। किसी बच्चे को फुसलाने के स्वर में उसने कहा, "अरे, तुमने तो तक्रिए के खोल पर अंग्रेजी में 'गुडनाइट' की कढ़ाई की है। मैंने तो ध्यान ही नहीं दिया था कि तुम इतनी मेहनत से अंग्रेजी पढ़ रही हो।" "तुम महान हो!" मैंने कहा। उसने बड़े प्यार से मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "छयेन, मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ। तुम अभी भी सबसे अच्छी हो!" किसी शैतान बच्चे की तरह मैंने उसकी गर्दन में हाथ डालकर बैठने की कोशिश की।

तब से मैं उसे बेहद प्यार करने लगी। एक दिन हम दोनों ग्रीष्मप्रासाद की खुनमिड झील के किनारे घूम रहे थे, भावना के अतिरेक में मैंने शादी का प्रस्ताव रखा। उसने पूरी गंभीरता के साथ मुझे बताया कि उसे तुरंत काम पर लौटना है। "क्या तुम मेरे साथ जिंदगीभर पहाड़ों में रहना चाहोगी?" उसने पूछा। मैंने इसके बारे में पहले नहीं सोचा था, यह सोचकर मेरा सिर चकराने लगा...

"मजबूती से पकड़कर बैठो!" ड्राइवर की चेतावनी मुझे सपने की दुनिया से लौटा लाई। लॉरी एक ऊबड़खाबड़ सड़क से गुजर रही थी। मैंने अपनी घड़ी देखकर चिंतित स्वर में पूछा, "क्या हम लोग कार्यस्थल के निकट आ गए हैं?"

"हमारे सामने बिंदुरेखा क्षेत्र है," ड्राइवर ने कहा, वह एकटक आगे की सड़क देख रहा था। उसकी छोटी मूंछें हवा से फड़क रही थीं।

"क्या तुम्हारा बटालियन बिंदुरेखा क्षेत्र में स्थित है?"

"हां।"

“क्या तुम लोग बहुत व्यस्त हो?”

“नहीं, बहुत अधिक तो नहीं! बस दिनभर में दो फ़ाल्ती और बारह घंटे की एक पाल्ती। इसमें आपात्कार्य शामिल नहीं है।” उसके व्यंग्य ने मुझे चौंका दिया। एक नया सैनिक मुझे प्रभावित करना चाह रहा है, मैंने यही सोचा।

५

लॉरी चट्टानों और बलुआ पत्थर के ढेर के पास आकर रुकी। उन पर बर्फ की मोटी तह जमी हुई थी। हम पहुंच गए थे। पर पहुंचने के बाद मुझे बेचैनी और उलझन सी महसूस हुई।

हान लॉरी से उतरा, ठंड के कारण उसके होंठ कांप रहे थे। उसने मुझे बताया कि यह स्थान समुद्र सतह से ३,००० मीटर की ऊंचाई पर है, इसका नाम बिंदुरेखा क्षेत्र इसलिए पड़ा कि यहां की खड़ी व संकरी चट्टानों का सर्वेक्षण करना मुश्किल है। इसी कारण नक्शे में इस स्थान को बिन्दुओं से दर्शाया पड़ा। “तुम यहां रुको। मैं डिप्टी बटालियन कमांडर को बुलाने जा रहा हूँ।” वह चट्टानों के बीच से कुशलता के साथ दौड़ता हुआ दूसरी तरफ गया। वहीं सैनिक थे। तेज हवा के कारण मैं उनकी बातचीत नहीं सुन सकी। फिर भी मैंने देखा कि उनमें से एक आकाश की तरफ इशारा कर रहा है। मैंने भी उधर देखा।

अदभुत! मैंने पहली बार ऐसी खड़ी चट्टान देखी थी। चट्टान किसी घायल जंगली भालू की तरह आक्रमण के लिए तैयार लग रही थी, उसकी फूत्कार से धुएं और वाष्प का बादल उठ रहा था। धुंधले बादलों के बीच चट्टान से चिपकी एक अस्पष्ट आकृति तेज हवा के कारण हिल रही थी। वह इस्यात के डंडे से लटकी चट्टान पर चोट करने की कोशिश कर रहा था। किसी भी क्षण वह जीर्ण पत्ते की तरह उड़ सकता था। “क्या वह चिथुड़ हो सकता है?” अचानक मैं डर से कांपने लगी। अच्छी तरह से देखने के लिए अपने सुन्न पैरों के सहारे दौड़कर मैं आगे गई।

“रुक जाओ, यह खतरनाक है!” हान ने मेरी तरफ दौड़कर आते हुए कहा। इसके पहले कि मैं कुछ समझ सकूँ पूरी घाटी एक भयंकर धमाके से हिल गई। धमाके के साथ बर्फ और रेत के बादल उड़े और चिथुड़ मेरी नजरों से ओझल हो गया। मैंने तेज चीख भरी और आंखें बंद कर लीं। फिर क्या हुआ मुझे पता न चला।

न जाने कितनी देर के बाद मुझे होश आया, एक परिचित आवाज सुनाई पड़ी, “क्या हुआ? क्या कोई घायल हो गया?” फिर आश्चर्य और खुशी के साथ उसी आवाज में उसने पूछा, “अरे, तुम यहां कैसे आ गई?” हान और उसके अन्य साथी मुंह बन्द करके हंस रहे थे। मेरा चेहरा लाल हो गया। मैंने उसे भरी नजरों से देखा। उसे देखकर मैं अचंभित हुई। उसने बेंत की पुरानी टोपी पहन रखी थी, रुईदार लंबे कोट के ऊपर कमर पर मोटी सुरक्षा-पेटी बंधी थी। उसके जूते पर बर्फीली कीचड़ थी और उसका चेहरा व शरीर बर्फ और चट्टान के कणों से भरा था। केवल उसकी काली चमकदार आंखें ही थीं जिनसे मैं उसे पहचान पाई। मैं अत्यंत संतप्त थी।

मेरी आशा के विपरीत वह मुझे देखकर उत्साहित नहीं हुआ। मुझे वह रात अभी तक याद है, उसकी अकादमी की पढ़ाई समाप्त होने वाली थी। एक रात ग्यारह बजे दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। मैंने सोचा, कोई भयानक घटना घटी है। पर दरवाजे के बाहर चिथुड़ खड़ा था। उसने सहज स्वर में कहा, “कोई खास बात नहीं है, बस मैं तुमसे मिलना चाहता था... क्यों? यह मत पूछना! मुझे ऐसा पूर्वाभास हुआ कि हम फिर कभी नहीं मिलेंगे।” मैं रातभर उसके साथ टहलती रही। उस रात ही मुझे पता चला कि वह भी मुझसे असीम प्यार करता है...

और अब, संभव है यह औरत का सहज बोध हो, पर मुझे लगा कि वह किसी समस्या से परेशान है, अन्यथा वह इतने विरक्त भाव से नहीं मिलता। उसने ठंडे स्वर में कहा, “हान तुम्हें बटालियन हेडक्वार्टर में ले जाएंगे। मुझे यहां कुछ कार्य निबटाने हैं।” “जैसी तुम्हारी मर्जी,” मैंने भी ठंडा सा जवाब दिया। वह थोड़ा झिझका, शायद कुछ कहना चाहता था। पर उसने अपना इरादा बदला और हान की तरफ बढ़ते हुए कहा, “वह चट्टान हटा दी गई है। सैनिकों से कहो कि वे अब चिंता न करें। जैसे भी हो, दोपहर चार बजे के पहले सड़क की सफाई करवा देना। यह तुम्हारी जिम्मेदारी होगी। मैं राजनीतिक प्रशिक्षक को फोन करने जा रहा हूँ।”

हवा के साथ उड़ते बर्फ के कण चेहरे पर चुभ रहे थे। थोड़ी देर में ही ठंड से मेरे पांव सुन्न हो गए, पर मेरा दिल और भी ठंडा हो गया था। हान से जब उसकी बात खत्म हो गई तो उसके साथ जाने के लिए मैंने अपना बैग उठाया। उसने मेरी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और फोन करने के लिए आगे बढ़ गया। उसके प्रति मेरी सहानुभूति नाराजगी में बदल गई। उसने जरूर मेरे बारे में कुछ सुना होगा और मेरे आने के कारण का अनुमान किया होगा। इसलिए वह जानबूझकर मेरे साथ ठंडा बर्ताव कर रहा है।

पिछली बार उसके जाने के कुछ दिनों के बाद उसके रेजीमेंट कमांडर एक सम्मेलन में भाग लेने पेइचिङ आए थे। वह मुझसे मिलने आए थे और मुझसे आग्रह किया था कि मैं उससे शादी कर लूं और उसके साथ रहूं। उन दिनों मीमी भी मुझे परेशान कर रही थी कि मैं श्याओ ध्येन के एक दोस्त से मिलूं, जो जल्दी ही विदेश जाने वाला था और जिसके पिता एक बड़े अधिकारी थे। दुविधा में मैंने दोनों प्रस्ताव ठुकरा दिए। इसके कुछ ही दिनों के बाद चिथुड़ का पत्र आया था, पत्र में उसका आग्रह था कि मुझे श्याओ ध्येन और मीमी से संपर्क तोड़ लेना चाहिए। ओह, मैं कैसी बुरी स्थिति में फंस गई थी! मेरी छोटी बहन चिथुड़ की बड़ी सराहना करती थी, उसने भी कहा कि चिथुड़ एक अच्छा आदमी है, पर अच्छा पति नहीं हो सकता।

मैंने सोचा, चलो बहुत हुआ। चूंकि वह इस ठंड में मुझे जानबूझकर छोड़ गया है, इसलिए मैं भी साफ-साफ अपनी बात बताकर दोपहर में लौट जाऊंगी। यह जगह रहने लायक नहीं है।... नहीं, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। किसी भी अंतिम निर्णय पर पहुंचने से पहले मुझे अच्छी तरह से सोच लेना चाहिए। कोमल भावनाओं वाले व्यक्ति के लिए ऐसा संबंध विच्छेद भयंकर आघात होगा। इसके बाद उसका क्या होगा?

धड़ाम! फिर से कहीं धमाका हुआ। मैंने उस खड़ी चट्टान की तरफ देखा, जिसकी लटकती चट्टान अभी-अभी हटाई गई थी। चिथुड दौड़ा हुआ आया, उसने पसीने से भीगा अपना हेलमेट मुझे पकड़ाया और मेरा बैग उठाकर तेज कदमों से भागा। मैं भी पीछे-पीछे भागी। बिंदुरेखा क्षेत्र से बाहर सुरक्षित स्थान में आने पर उसने मुझे बताया, “मैं जानता हूँ, तुम मुझसे नीचे हॉस्टल में मिलने के लिए परेशान थीं। जब हान का फोन आया, उस समय मैं कार्यस्थल पर था। इसलिए तुम्हें देने के लिए एक नोट लिखकर मैंने ड्राइवर को दिया था... बिंदुरेखा क्षेत्र चट्टानों के टुकड़ों से भरा और खतरनाक है, पिछले दिनों कुछ दुर्घटनाएं भी हुईं। यातायात बंद रहने के कारण पिछले कुछ दिनों से ईंधन और उपकरण भी नहीं लाये जा सकते थे। हमारा खाना भी समाप्त हो रहा था।” हालांकि उसने मुस्कुराने की कोशिश की, पर उसकी आवाज ने मुस्कराहट का साथ नहीं दिया और उसकी चिंता व्यक्त की। इस तनावपूर्ण वातावरण को हल्का करने के लिए मैं कुछ बोलती, इसके पहले ही मैंने घुटन महसूस की और मुझे मतली सी आई। उसने मेरी तरफ देखते हुए सहज शब्दों में कहा, “तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। यह जगह काफी ऊंचाई पर है। नए-नए आने वालों को आरंभ में थोड़ी परेशानी होती है। पर प्रकृति के नियम के अनुसार औरतें जल्दी अभ्यस्त हो जाती हैं।” मैं सड़क के किनारे बैठ गई। मेरी सांस तेज चल रही थी। मैंने उल्टी करने की कोशिश की; पर कुछ भी नहीं निकला, शायद कल शाम से कुछ न खाने के कारण ऐसा हुआ हो। उसने झुककर मेरी पीठ को सहलाया और थपकी दी। मैंने किंचित तीखे स्वर में कहा, “इतने जोर से नहीं!”

गर्मियों के दिन ही थे। उतरते समय मैंने देखा कि बर्फ पिघल रही है। ढलान पर इधर-उधर घास की हरी पट्टियाँ उभर आई थीं। सड़क के किनारे की हिमवर्तिकाओं के बीच से छोटे पीले फूल झांक रहे थे और सूरज भी गर्मी दे रहा था। चिथुड की विनोदवृत्ति लौट आई। वह मुझसे सवाल पूछता हुआ बर्फ पर उछलता और फिसलता रहा। पेइचिड की गतिविधियों में उसकी विशेष रुचि थी। यह जानकर कि हाल ही में एक विदेशी सिम्फनी वाद्य मंडली आई थी, वह ईर्ष्या से भर गया। “कितना अच्छा होता, यदि इसका सीधा प्रसारण होता और हम यहां पहाड़ों में इसे देख सकते!” पता नहीं वह मेरे आने का कारण जानना चाह रहा था या पेइचिड लौटने की इच्छा प्रकट कर रहा था?

बर्फ के पिघलने से ऊबड़-खाबड़ ढलानों से लगातार पानी टपक रहा था। पानी के टपकने की आवाज हर तरफ थी। कहीं भी पांव सीधा रखने के लिए सूखी जमीन नहीं मिली। “ऊंची एड़ी के जूते पहनकर चलने से तुम्हारे टखने में मोच आ जाएगी। आओ, मैं तुम्हें पार करा देता हूँ।” मैं नहीं समझ पाई कि वह मजाक कर रहा है या चिढ़ा रहा है। उसकी बात न सुन पाने का बहाना करके मैंने एक पत्थर पर अपना पांव रखना चाहा। “नहीं, ऐसे नहीं होगा!” उसने दबी हंसी के साथ कहा। “बेहतर होगा कि तुम मेरे जूते पहन लो। मैं नंगे पांव चलूंगा।” मैं खीझकर आगे की ओर झुकी, तभी एक ट्रक बर्फ के कण उछालता हुआ तेजी से गुजरा। घबराहट में पत्थर पर रखे पांव का संतुलन बिगड़ गया और मैं कीचड़ में फंस गई। चड चिथुड ठहाके लगाकर हंसा। “अच्छ हुआ! अब तुम थ्येशनान पहाड़ को समझ सकोगी।” कितनी क्रूर और प्रचण्ड हंसी थी। यह तो हद थी। इसलिए खीझती हुई मैं बोली, “हो, मैं

तुम्हें अच्छी तरह जानती हूँ, जानती हूँ कि नहीं?" वह घबराकर बोला, "अरे मैं तो मजाक कर रहा था और तुम नाराज हो गई।" मैंने कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप बर्फीले कीचड़ के बीच चलती रही, मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। वह भी चुपचाप चल रहा था और थोड़ी-थोड़ी देर के बाद मेरी ओर देख लेता था। उसकी गहरी सांसों मुझे सुनाई पड़ रही थीं।

६

बटालियन हेडक्वार्टर के शिविर ढलान को समतल कर गाड़े गए थे। प्रवेश द्वार पर लकड़ी के तीन लठ्ठों को जोड़कर एक संरचना बनी थी। द्वार के ऊपर बीच वाले क्षैतिज टुकड़े पर सफेद कागज का एक बड़ा फूल टंगा था, दोनों तरफ के खंभों पर सफेद कागज पर काले अक्षरों में शोक वाक्य लिखे थे :

उन्होंने थ्येनशान पहाड़ में कुर्बानी दी;
उन्होंने अपना जीवन क्यों अर्पित किया?
देश और सेना का नाम रौशन करने के लिए।
वह दस वर्षों तक पत्नी से अलग रहे;
उन्हें कहां खुशी मिली?
अनगिनत जोड़ों के मिलन में।

मैंने तुरंत चिथुड के ठोस गहरे अक्षर पहचान लिए। वह थोड़ी देर के लिए वहां रुका और उसने फिर से उदास नजरों से उन्हें देखा। "कोई मर गया?" मैं अभी सोच ही रही थी कि राजनीतिक प्रशिक्षक निकलकर हमसे मिलने आए।

दरवाजे और खिड़कियों के पर्दे के पीछे से चेहरे झांके। ऐसा लगा कि सब मुझे ही देख रहे थे। सदेशवाहक मेरे धूप के चश्मे को घूर रहा था। मैंने उन बदबूदार और प्रचण्ड सैनिकों के बीच स्वयं को अकेला महसूस किया। मैं बिना कुछ बोले एक मेज के पास जाकर बैठ गई।

"क्यों, पेइचिड की लड़की को लाज नहीं आनी चाहिए, आनी चाहिए क्या?"

"बकवास बंद करो! उसे चक्कर आ रहा है। लो, मिठाई खाओ..." चिथुड ने मुस्कराने और मेरी झंप मिटाने की कोशिश की। मिठाई देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। "अरे विवाह के पहले ही मुंह मीठा करा रहे हो? चलो अच्छी बात है! हम तुम्हारे सुहाग कक्ष में परंपरा के अनुसार आएंगे। हम अभी से ही बता देते हैं। अच्छा होगा कि अपनी भावी पत्नी को अभी से बता दो। हम बड़े ही उजड़ू हैं, हम जब तुम्हारे विवाह की खुशी मनाएं तो वह नाराज न हो।" चड चिथुड उनकी बात पर सिर हिलाए जा रहा था। आखिरकार राजनीतिक प्रशिक्षक हमारी जान बचाने आए। खुशी के साथ वे सब अपने काम पर लौट गए। जब मैंने सुना कि चिथुड और राजनीतिक प्रशिक्षक मेरे रहने की समस्या पर विचार कर रहे थे, तब तो मुझे बहुत घबराहट होने लगी।

"तुम लोग कैसा मजाक करते हो!" मैंने शिविर में घुसते समय उसे रोककर कहा। उसने

मुझे समझाने की कोशिश की, “वे तुमसे मिलकर खुश थे, इसलिए उन्होंने तुम्हें तंग किया। हान ने यह समाचार फैला दिया है कि तुम यहां मुझसे शादी करने आई हो!” उसके चेहरे पर हंसी थी। मैंने बीच में ही टोका, “अरे, उसे किसने बताया कि मैं तुमसे शादी करने आई हूँ?” मेरी टिप्पणी से उसका चेहरा लटक गया। वह और भी कुछ बताना चाहता था, पर चुप हो गया। उसने लंबी सांस ली और शिविर से बाहर चला गया।

छोटी खिड़की से आ रही सूरज की किरणों से शिविर इतना गर्म हो गया कि ऊनी स्वेटर निकालने के बावजूद मुझे पसीना आता रहा। चिथुड़ जब दोबारा लौटकर आया तो उसने स्टोव पर से पिघले बर्फ से भरी बाल्टी उतारी और गीले कोयले डालकर स्टोव की आग पर रखी। “पहाड़ों का मौसम ऐसा ही होता है। यहां एक ही दिन में चारों मौसमों से गुजरना पड़ता है और उसी के अनुसार कपड़े भी बदलने पड़ते हैं।” अपना चेहरा धोने के बाद उसने बिस्तर के नीचे से चप्पलें निकालीं और मुझे देते हुए कहा, “इन्हें पहन लो। मैं तुम्हारी जूतियां बाहर धूप में रख आता हूँ।” उसका गुस्सा उतर गया था। “नहीं, मैं अपनी जूतियां नहीं बदलना चाहती।” मैंने खीझकर कहा। “उतार दो। वे भीग गई हैं, तुम्हें ठंड लग जाएगी।” उसने खुशामद के स्वर में कहा, “तुम अभी भी वही जिद्दी लड़की हो, एकदम नहीं बदलीं। ठीक है, मैं गलत था, अच्छा!” वह जूतियों के फीते खोलने के लिए झुका। मैंने पांव झटका, झटके में उसके सिर पर चोट लगते-लगते बची। मैं घबराई हुई थी, पर वह मेरे सामने ऊकड़ू बैठा अपनी तेज और कोमल निगाहों से मुझे घूर रहा था। वह मुझे छोटी नटखट बहन को फुसलाता बड़े भाई सा लगा। मैं उससे अत्यंत प्रभावित हुई।

सचमुच वह काफी दुबला लग रहा था। धूप में लगातार काम करने और पठार की हवा से उसका रंग गहरा पड़ गया था। धंसे गाल और खूटीदार दाढ़ी से वह चालीस की उम्र का लग रहा था। उसकी चमकीली आंखें थकान और चिंता से लाल हो गई थीं और उसकी आवाज में भी भारीहट थी। बटालियन हेडक्वार्टर आने के बाद से वह मेरी देखभाल करने में इतना व्यस्त रहा था कि उसे कपड़े बदलने की भी फुर्सत नहीं मिली थी। अब तो उसके कोट पर जमे बर्फ के कण पिघलने लगे थे। यह देखकर मैंने सोचा कि मुझे उसे तकलीफ नहीं देनी चाहिए। “ठीक है, मैं अपनी जूतियां खोल देती हूँ।” मैंने समझौते के स्वर में कहा, “तुम भी अपने कपड़े बदल लो। इन कपड़ों में तुम कितने भयंकर लग रहे हो।” उसने मुस्कराकर कहा, “नहीं, अभी मुझे खाने की व्यवस्था करनी है।” “तुम पागल तो नहीं हो गए हो? अपना रुईदार कोट उतारो!” मैंने उससे कहा और उसका कोट खींचा। पर वह तुरंत खिसक गया। उसके इस व्यवहार से मैं चिढ़ गई। थोड़ी देर के बाद उसने मजबूर होकर कोट उतारा, उसने अपने दोनों हाथों से पीठ दबा रखी थी और मुस्कराने की कोशिश कर रहा था।

पहले मैंने उसकी तरफ न देखने का बहाना किया, पर अचानक उसके पीछे जाकर मैंने उसके हाथ हटाए। ओफफ! मैं स्तंभित रह गई। उसकी पीठ पर गहरा घाव था और कमीज कच्चे घाव से चिपक गई थी। कमीज पर खून और पसीने के दाग थे। तो इसलिए ही वंह हमेशा चमड़े की चौड़ी पेट्री बांधे रहता था और कोट नहीं उतारना चाहता था। उसने घाव पर अधिक ध्यान नहीं दिया। “कोई खास बात नहीं है,” मुझे दिलासा देता हुआ बोला,

“खरोंच लग गई है, बस।” जाहिर था कि वह अपने घाव को सबसे छिपाए लगातार काम में लगा हुआ था। तौलिए को गर्म पानी में भिगोकर मैंने घाव से चिपकी उसकी कमीज गीली की और उतारी। उसकी पीठ पर मलहम लगाते समय मेरी पीड़ा आंसुओं में बदलकर उसकी पीठ को भिगो रही थी। मैं नहीं समझ पाई कि ऐसी प्रतिकूल स्थिति में वह क्यों जान की जोखिम उठा रहा है। चिथुड मेज के सहारे झुका मेरी शिकायतें सुन रहा था। थोड़ी देर के बाद वह बोला, “पिछले रविवार को बिदुरेखा क्षेत्र में भयंकर हिमसखलन हुआ था,” उसने धीमे स्वर में कहा, “पांचवीं कंपनी के राजनीतिक प्रशिक्षक इसमें मारे गए। पूरी चट्टान उनके खून से लाल हो गई थी। यह घटना तब हुई, जब उनकी पत्नी उनसे मिलने यहां आई थीं। वह आजकल नीचे शिविर में रह रही हैं।”

“अच्छा तो उसी औरत से मैं हॉस्टल में मिली थी!” मैं सन्न रह गई। चिथुड ने गहरी सांस ली और फिर सीधा होकर बोला, “उनकी शादी जल्दी ही हो गई थी। उनका बेटा दो साल का हो चुका है, पर वे दस वर्षों तक एक-दूसरे से अलग रहे। ख्वी की तबियत हमेशा खराब रहती थी। इस बार उनकी पत्नी उनके लिए चीनी जड़ी-बूटियां लेकर आई थीं। किसने सोचा था...” वह फफक पड़ा। “जब मैं उनकी लश निकाल रहा था तो मुझे चोट लग गई। गहरी चोट नहीं है। सच यह है कि ख्वी की मौत की याद ने इस घाव के दर्द को कम कर दिया है। तुमने कई महीनों से कुछ नहीं लिखा। मेरी स्थिति पागलों जैसी हो गई थी।” वह पलटा, भावातिरेक में उसने मेरे हाथ पकड़ लिए, वह अपनी भावनाओं को दबाने की कोशिश में होंठ भींच रहा था, पर उसकी आंखों में अभी भी आंसू भरे थे। “छ्येन, तुम कुछ अधिक दिन यहां रुको। मैं तुमसे बहुत बातें करना चाहता हूं...”

मेरा गला रुंध गया। उसकी भावुकता के सामने मुझे क्या कहना चाहिए? मैं स्वयं को दोषी और शर्मिंदा महसूस कर रही थी। मेरा दिल घबरा रहा था। मैं अधिक देर तक मानसिक यंत्रणा बर्दाश्त नहीं कर सकी और उसकी बांहों में लिपटकर रोने लगी। मैं रोती और उसके चौड़े सीने पर अपना सिर पटकती रही। मैंने उससे कहा, “चलो, लौट चलें! अगर तुम सेना की नौकरी छोड़ दो, तो मैं तुम्हारी कोई भी बात मान लूंगी। मैं तुम्हारी परेशानी बर्दाश्त नहीं कर सकती।”

वह मुस्कराया। अपने कठोर हाथों में मेरा चेहरा लेकर उसने उंगलियों से मेरे आंसू पोंछे और कहा, “यह तो बच्चों की बात हो गई। तुम्हें लगता है कि मैं जा सकता हूं?” “क्यों नहीं?” उसे अधिक बोलने का मौका दिए बिना मैंने पूछा और कहा, “तुम सैनिक यहां पहाड़ों में जीवन दांव पर लगा रहे हो, पर कौन जानता है, यों कहो कि कौन इसकी परवाह करता है? अनेक भूतपूर्व कार्यकर्ता किसी भी तरह पेइविड लौटने और काम ढूंढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे भी लोग हैं, जो इस देश में ही नहीं रहना चाहते। श्याओ थ्येन और कुछ अन्य लोग पासपोर्ट लेने की कोशिश में लगे हैं। मूर्खता न करो, चिथुड। तुम थ्येनशान पहाड़ से बाहर निकलो और दुनिया देखो। इसी में भलाई है।” मेरी आवाज तेज हो गई थी।

“हर आदमी अपने तरीके से इस दुनिया को देखता है। मेरा विश्वास है कुछ लोगों को

सड़क बनानी चाहिए ताकि दूसरे आराम से यात्रा कर सकें। जहां तक श्याओ थ्येन जैसे व्यक्तियों की बात है, बेहतर है कि उनके बारे में न सोचो।” चिथुड ने मुस्कराने की कोशिश करते हुए उत्साह से कहा, “छ्येन, आओ हम अपने बारे में बातें करें।”

ठीक तभी जो ड्राइवर मुझे लेकर आया था, उसने चिथुड को आवाज दी। वह शिविर से निकलकर बाहर गया। अजीब मुसीबत थी।

मैं मेज का सहारा लेकर खड़ी हो गई और उलझन में पड़ गई। उसकी साफ मेज पर पड़े हिम कमलों से हत्ती खुशबू आ रही थी। मेरी नजर मेज पर शीशे के नीचे दबी एक तस्वीर पर पड़ी। मेरी ही तस्वीर थी। आंखों से गुस्सा और अहंकार झलक रहा था। यह तस्वीर चिथुड ने ग्रीष्म प्रासाद की खुनमिड झील पर टहलते समय ली थी। उस दिन पहली बार उसने अपनी मजबूत बांहों में मुझे भींचा था। मैं विश्वास भी नहीं कर सकती थी कि उसके जैसे सैनिक के दिल में प्यार की ऐसी आग होगी। उसने मेरे बालों को चूमते हुए कहा था, “...हमें नीरस क्यों कहा जाता है? क्या हम केवल हट्टे-कट्टे हैं और हमारे पास दिमाग नहीं है? सच्चाई यह है कि प्यार की कीमत हम सबसे अधिक समझते हैं...।” “बड़ी ऊंची बातें कर रहे हो!” मैंने उसे चिढ़ाने की कोशिश की। “हां, यह सच है! अगर कोई व्यक्ति दूसरों से प्यार न करता हो तो वह सेना में भर्ती नहीं होना चाहेगा।” उसका दिल भोला था और उसने मुझे पूरे आवेग के साथ प्यार किया। पर क्या मैं सचमुच स्वार्थी और संकीर्ण थी? क्या हम शहर में रहकर देश की सेवा नहीं कर सकते? क्या मुझे अपनी इच्छा के अनुसार खुशी पाने का हक नहीं था?

चिथुड परेशान अवस्था में लौटा। वह कमरे में टहल रहा था, उसके भारी कदम किसी भावी तूफान की पूर्व सूचना दे रहे थे। डरते-डरते मैंने पूछा कि क्या बात हुई! गुस्से में वह चिढ़कर बोला, “हद हो गई! एक साल पहले सेना में भर्ती हुआ सैनिक सेना की नौकरी छोड़ना चाहता है और उसके बारे में हंगामा मचा रहा है। आजकल देहातों से आए सैनिक सेना की नौकरी छोड़ रहे हैं, देहातों में ‘ठेका जिम्मा व्यवस्था’ लागू होने के बाद से वे परिवार में आदमी की कमी होने का बहाना बनाते हैं, दूसरी तरफ शहरों और कस्बों के लोग सेना की नौकरी ही पसंद नहीं करते। कुछ इस साल सेना से भाग गए। सेना अधिकारी सीमांत क्षेत्र में खुशी-खुशी काम नहीं करते। ये लोग देश की समस्या के बारे में बिलकुल नहीं सोचते। वे केवल अपने बारे में सोचते हैं। बेहतर है कि उसे जाने दें, ऐसे व्यक्तियों से छुटकारा मिल जाए।” अपनी झुंझलाहट निकालने के बाद वह अपना माथा ठोकता हुआ कुर्सी पर बैठ गया। वह अत्यंत उद्विग्न था।

संदेशवाहक ने अब तक खाना तैयार कर लिया था, पर हम दोनों में से किसी की भी खाने की इच्छा नहीं थी। संदेशवाहक को अचंभा हुआ। मुझे खुश करने के लिए उसने मार्मेट (गिलहरी की जाति का एक जन्तु) लाकर दिया। चिथुड ने ठंडी मुस्कराहट के साथ सिर हिलाकर इशारा किया कि मैं थोड़ी देर उसके साथ बाहर टहल आऊं।

७

पहाड़ की तलहटी में विशाल घास मैदान था। मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। घास हवा में लहरा रही थी और लहरदार घास के बीच जहां-तहां जंगली पियोनी फूल दिखाई दे रहे थे। दूर अलस्तान नदी के दोनों किनारों पर सफेद शिविर गड़े थे, पुल बनने की जगह से गाड़ियों और मजदूरों की मिश्रित आवाजें आ रही थीं...

चिथुड फिर अत्यंत उत्साहित था। उसने ताजा हवा में गहरी सांस ली और मेरा हाथ पकड़े हुए एक मामोंट के पीछे दौड़ा। थोड़ी ही देर में मेरी सांस उखड़ गई, मैंने एक हाथ से सीने को दबाकर उससे रुकने के लिए कहा। दौड़ना छोड़कर वह सीने के बल घास मैदान पर ऐसे लेट गया, मानो वह उसे अपनी बांहों में भरने की कोशिश कर रहा हो। “छ्येन, देखो, कोमल घास देखो। सड़क बन जाने के बाद चरवाहे आसानी से पहाड़ों में आ सकेंगे। यह पूरा घास मैदान एक विशाल मशीनीकृत पशु फार्म बन जाएगा...” उसने कल्पना में खोकर कहा, “शहर में रहने से क्या फायदा है? प्रदूषण, शोर, एक कमरे में तीन पीढ़ियों का एक साथ रहना, पार्क में फूलों से अधिक संख्या में जमी भीड़ और एक ही बेंच पर बैठे दो प्रेमीयुगल। यहां पहाड़ों में बस इस घास मैदान की तरफ देखो और तुम्हारी सारी चिंता, ऊब और परेशानी पलभर में गायब! लोग मुझे मूर्ख कह सकते हैं। पर मैं इसकी परवाह नहीं करता।” वह अपनी बांहें फैलाकर बैठ गया और फिर पांवों को समेटकर सोचने में डूब गया। थोड़ी देर बाद बोला, “तुम जानती हो, थाड राजवंश (६१८-९०७) में एक प्रसिद्ध यात्री श्वेन च्वाड (ह्वेन त्साड) और मिड राजवंश (१३६८-१६४४) में एक महान नाविक चड हुए थे। पिछली शताब्दियों में हमारे देश को लूटा और अपमानित किया गया। यह सही है कि मनुष्य इतिहास बनाता है, पर इतिहास भी राष्ट्र की भावना को प्रभावित करता है। क्या हम पिटे-पिटाए रास्ते पर चल रहे हैं? क्या हम सामंती कड़ी से और अर्द्ध-औपनिवेशिक देशों की हीन मानसिकता और चापलूस स्वभाव से पूर्णतः मुक्त हो चुके हैं? सभी व्यक्ति यथास्थिति से संतुष्ट हैं और कोई परिवर्तन नहीं चाहते। पायनियरों का काम करने का वह दृढ़ उत्साह कहां है, दुनिया की नयी चीजों के अन्वेषण में लगे साहसिक कहां हैं या वे वीर कहां हैं, जो अपने देश को विश्व में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करते हैं। शायद मैं कुछ अधिक ही सोच रहा हूं, पर मेरी दृढ़ मान्यता है कि यदि हम ईमानदारी से अपने देश को मजबूत बनाना चाहते हैं तो हमें युवाओं को ऐसे उत्साह से अनुप्राणित करना होगा, तभी सभी अपनी योग्यतानुसार योगदान करेंगे। तुम क्या ऐसा नहीं सोचती?”

मैंने कुछ नहीं कहा। मैंने उसके विचारों की प्रशंसा की पर अपने अंतर्मन में रास्ता ढूंढ़ रही थी। एक तरफ मैंने चिथुड के प्रति अभूतपूर्व प्रेम महसूस किया, कई बार कहने की इच्छा हुई कि मैं शादी को तैयार हूं। दूसरी तरफ मैं जानती थी कि चिथुड को बदल पाना असंभव है। प्यार आलिंगन और चुंबन ही नहीं होता। अलगाव, बच्चों का पालन-पोषण, सेना के साथ लगी अदला-बदली ...मेरे अंदर अन्वेषक का उत्साह नहीं था। मैं वीरंगना होने का जोखिम नहीं उठा सकती थी। जीवन निष्ठुर था और मैं मनुष्य के इतिहास को समझने

और उसमें अपना योगदान करने की स्थिति में नहीं थी। मेरे लिए राष्ट्र की भावना या उत्साह संबंधी बहस से बेहतर मेरे बोनस का बढ़ना था। मैंने यह सत्य स्वीकार लिया था कि मैं महान बनने के लिए पैदा नहीं हुई हूँ। मेरे लिए अपने सुखद घोंसले में लौट जाना ही बेहतर था। और इसमें गलत भी क्या था? पर मेरे दुख ने मुझे निराश कर दिया। मुझे चिथुड को छोड़ देना चाहिए। पर मैं कोई फैसला नहीं कर सकी।

सूरज धीरे-धीरे हिमाच्छादित चोटियों के पीछे छिप गया। चिथुड खामोश चल रहा था। उसकी खामोशी असहनीय थी। वह शोक और दुख में डूबा खी हाएचओ की कब्र के पास रुका। मुझे उसे देखने की हिम्मत नहीं हुई। इसी समय रेजीमेंट कमांडर की पत्नी डाक्टर चाओ आई। उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, “अरे, मैं तुम्हें पहाड़ में खोज रही थी। चलो आज रात को हमारे साथ रुकना। हमारा क्लीनिक कार्यस्थल के पास ही है। हमने तुम्हारे लिए एक शिविर भी तैयार किया है। मेरे पति तुमसे मिलना चाहते हैं।”

“मुझे एक ही दिन की छुट्टी मिली थी और मुझे आज ही लौटना है। धन्यवाद, फिर कभी।” मैंने शिष्टापूर्वक इनकार किया, क्योंकि मैं समझती थी कि मुझे यहां रुककर चिथुड को फिर किसी भी तरह का कष्ट नहीं देना चाहिए।

निराश होकर डाक्टर चाओ चली गई। “चलें, जल्दी वापस जाएं!” चिथुड ने अचानक दृढ़ स्वर में कहा, “मुझे चार बजे कार्यस्थल पर जाना है।” तभी संदेशवाहक दौड़ा हुआ आया और हांफते स्वर में बोला, “डिप्टी बटालियन कमांडर, रेजीमेंट कमांडर ने मुझे यह बताने के लिए आपके पास भेजा है कि आप घर पर रह सकते हैं और...” मेरी तरफ देखकर वह दबी हंसी हंसा। चिथुड ने उसे रोककर कहा, “दौड़कर जाओ और कमांडर को बताओ कि मैं जल्दी ही कार्यस्थल पर जा रहा हूँ।” “नहीं, यह नहीं हो सकता। आपने खाना भी नहीं खाया है, आपको पलक झपकाने की भी तो फुर्सत नहीं मिली...” “बकवास बंद करो, जाओ, जल्दी जाओ।” चिथुड को अचानक गुस्सा आ गया, पर संदेशवाहक गया नहीं, वह वहीं खड़ा बुदबुदाता रहा। चिथुड उसकी ओर एक कदम बढ़कर डाट-डपट करने ही वाला था कि कुछ सोचकर उसने अपना इरादा बदल दिया और जबरन मुस्कराहट के साथ कहा, “जाओ, जाते हो कि नहीं? तुम्हें नहीं मालूम कि कार्यस्थल पर एक मीटिंग होने वाली है?” निराश होकर संदेशवाहक कार्यस्थल की तरफ लौट गया।

बिगुल बजा। लाउडस्पीकर से सैनिक धुन आने लगी। कंधे पर औजार लिए और छाती पर फूल टांके सैनिकों की पंक्तियां बिंदुरेखा क्षेत्र की तरफ बढ़ रही थीं। बैरक में पहुंचने पर मुझे वहां का वातावरण गंभीर किन्तु हलचल से भरा लगा। चिथुड ने जब रक्षा-पेटी पहनी और दराज से सफेद फूल निकाला तो मुझे अशुभ की आशंका हुई। मैं पूछ बैठी, “तुम लोग कैसी मीटिंग करने जा रहे हो? तुम वहां जाने के लिए जिद्द क्यों कर रहे हो?” थोड़ी झिझक के बाद उसने कहा, “राजनीतिक प्रशिक्षक खी की जहां मौत हुई थी, उस स्थान पर सेना के झंडे के नीचे रेजीमेंट के सभी लोग शपथ लेंगे। हम बिंदुरेखा क्षेत्र पर विजय पाने की सौगंध लेंगे। आज से मैं पांचवीं कंपनी के राजनीतिक प्रशिक्षक का काम देखूंगा। मीटिंग के बाद मैं सैनिकों के साथ कार्य को आगे बढ़ाने जाऊंगा। मुझे जाना चाहिए, है कि नहीं?”

“चिथुड, तुम... तुम मत जाओ!” अपनी भावनाओं को वश में न रख पाने के कारण मैंने उसके हाथ से सफेद फूल छीन लिया। मानो वह मेरे सामने से तुरंत ओझल हो जाएगा। “नहीं, वापस दो!” उसने मेरा हाथ गुस्से में पकड़ा। उसकी क्रुद्ध नजरों के बावजूद मैं रोने लगी और बोली, “नहीं, मैं नहीं दूंगी... चिथुड, इस जगह को छोड़ दो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ। हम अभी बात कर कोई रास्ता निकालेंगे। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती... हां... मैं नहीं रह सकती!” मैंने उसके चौड़े कंधों को बांहों में भरा और उसके सीने से सटकर मैंने उसकी आंखों में देखा। मेरी आंखों में अनुनय था। भावना के संचार से उसका सीना फूल गया था। उसने खिड़कियों के बाहर दूर पहाड़ों को देखा। फिर एक-एक शब्द पर जोर देते हुए धीमी और थरथराती आवाज में बोला, “तुम्हें सच बताऊँ, पिछले छै महीने से मैं स्वयं अनिर्णय की स्थिति में पड़ा हूँ। मैंने तुमसे अधिक पीड़ा सहनी है। ऐसे भी क्षण आए, जब मैंने लगभग सेना छोड़ने का फैसला ले लिया। मेरी मां भी तुम्हारी तरह बराबर रोती रहती है। पर अब मैंने यहीं रहने का फैसला कर लिया है और आगे से फिर कभी तुम मुझसे सेना की नौकरी छोड़ने के लिए मत कहना।... कुछ दिनों पहले अधिकारी और तकनीशियन सीमांत क्षेत्र की सड़क का मुआयना करने गए थे। बारिश हो रही थी और संयोग की बात कि हमारी जीप सीमांत चौकी के पास की कीचड़ में फँस गई। जब हम कीचड़ में फँसी जीप निकाल रहे थे तो उन्होंने हम पर सीटियां बजायीं, हमारी हंसी उड़ाई और फांटो भी खींचे। उन्होंने अपने सैनिकों को हमारी मदद के लिए नहीं भेजा। खराब सड़क और पिछड़े उपकरणों के कारण वे हम पर हंसे। यह तो अपमान था; मेरा व्यक्तिगत अपमान नहीं, बल्कि सेना और देश का अपमान था। बोलो, है कि नहीं? अब न केवल बड़ा देश हमारा उपहास करता है बल्कि छोटा देश भी हमें धमकी देता है। पर कुछ देशवासी अभी भी यह महसूस नहीं करते कि हम खतरों के बीच जी रहे हैं। मजबूत सेना के बिना और सीमाओं की रक्षा व निर्माण करने में जुटे सैनिकों के परिश्रम और जोखिम के बिना हमारी सीमा खतरे में पड़ सकती है। सीमा खतरे में हो तो राष्ट्र सुरक्षित नहीं रह सकता — ‘चार आधुनिकीकरण’ और लोगों की खुशी व प्रेम की बात तो जाने दो! इस बारे में सभी अलग-अलग तरीके से सोचते हैं। मैं अपने विचार तुम पर नहीं लादूंगा। नए चीन के सैनिक की हैसियत से आक्रमणकारियों के टैंक से कुचले जाने के बजाए देश की आधुनिक सुरक्षा के लिए मैं अपनी जान दे देना बेहतर समझूंगा...।”

मैंने अनुनय किया, “चिथुड... मुझे पर अधिक जोर मत डालो। मुझे ठंडे दिल से फिर सोचने का मौका दो...” मैंने स्वयं को उसकी बांहों में छोड़ दिया, मेरी सारी शिकायतें ज्वालामुखी की तरह फूट निकलीं...

बाहर से जीप के हॉर्न की आवाज आई। हिमकण फिर से उड़ने लगे और जल्दी ही सड़क हिमाच्छादित हो गई तथा नीला आकाश उनसे भर गया। मैं दूर बहुत दूर जा रही लॉरी की केबिन में निढाल पड़ी थी।

धड़ाम! फिर से धमाके की आवाज आई। ठंडी हवा में सेना का झंडा फहरा रहा था और मशीनों के चलने से एक मिश्रित धुन सुनाई पड़ रही थी। मैंने केबिन की खिड़की से बाहर

देखा। हजारों सैनिकों के ऊपर से फिसलती मेरी नज़रें चिथुड़ को खोज रही थीं। ओह, बिंदुरेखा क्षेत्र की लटकती चट्टान के ऊपर खड़ा मेरा प्रियतम चिथुड़ हाथ हिलाकर मुझे विदा कर रहा था, बर्फ की विस्तृत सफेदी के बीच उसकी टोपी का लाल सिनारा किसी धधकती लौ की तरह चमक रहा था...